30/3/19

(उक) (B)

दलित (Dalits)

→ सामाजिक दृष्टि से कमजोर वर्गों को समाज में हिन दृष्टि से देखा जाता है। तथा अन्य वर्ग उनसे एक निश्चित सामा - जिक दूरी बनाए रखते है कभी-2 दुर्भाग्य वस उन्हें सामाजिक तीरस्कार का भी सामना करना पड़ता है। भारतीय समाज में ऊँच - नीच, छुआ-छूत जैसी बुराईयों का मुख्य शिकार यही 'दुर्बल' वर्ग है। समाज के ये कमजोर वर्ग जहाँ सा दृष्टि से निम्न स्तर पर रहे है। वही ये वर्ग शिक्षा के प्रसार से भी प्राय वंचित ही रहे है। दलित भारतीय समाज के इन कम वर्गों में अत्यन्त निम्न स्थान रखते हैं।

दलित का अर्थ

→ दलित शब्द से अभिप्राय वह व्यक्ति या वर्ग है। जिसका समाज में अत्यन्त निम्न स्थान है। जो उत्पीड़न का शिकार है। तथा जिक जिसका जीवन अभाव दुख एंव अपमान का जीवन है। जब हम दलित शब्द का प्रयोग करते है, तो हमारा अभिप्राय दुर्बल वर्गों के अत्यन्त निम्न वर्ग है। 'दलित' वर्ग कहलता है। ऐसा माना जाता है, कि दलित शब्द संस्कृति से लिया गया है जिसका अर्थ पीसा हुआ, कुचला हुआ, रौंदा हुआ अथवा टूकड़ों में टूटा हुआ है। इस शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग ज्योति राव फुल्ले

MY SCHOLAR

ने 19वी शताब्दी में अस्पृश्यों के हिन्दुओं द्वारा उत्पीड़न के संदर्भ में किया था।

भारत के विकास क्रम में दलित शब्द का प्रयोग अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अन्य ~~पीछड़े~~ पिछड़े वर्गों के ऐसे व्यक्तियों के संदर्भ में किया जाता है, जो गरीबी रेखा के नीचे अपना जीवन यापन कर रहे हैं। गरीबी रेखा का निर्धारण योजना आयोग ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में गरीबी के आय प्रमाण पत्रों के आधार पर करता हैं। योजना आयोग के दृष्टि में गरीब ~~सीमा~~ वे व्यक्ति हैं, जिनका ~~अ~~ उपभोग, जिनका व्यय अपर्याप्त है। जिनकी क्रय शक्ति कम हो, तथा जिन्हें भोजन में न्यूनतम कैलोरी की मात्रा भी प्राप्त नहीं होता हैं। विक्टर प्रेमसागर के अनुसार "यह शब्द भारतीय समाज में कुछ लोगों की कमजोरी, निर्धनता तथा अपमान को व्यक्त करता है। जो उन्हें उच्च जातियों के हाथों झेलना पड़ता है।" वैसे भारत के उच्चतम न्यायालय में 'दलित' शब्द असंवैधानिक माना है। परम्परागत हिन्दू समाज के संदर्भ में दलितों की परिस्थिति उन व्यवसायों से जुड़ी हुई थी जिन्हें सार संस्कारीक दृष्टि से अपवित्र माना जाता है। इन व्यवसायों में लगे होने के कारण दलितों को प्रदूषित माना जाता है तथा यह मान्यता थी कि उनका प्रदूषण संपर्क से दूसरे लोगों में भी आ सकता है। इसका ~~कि~~ परिणाम हुआ कि दलितों को अलग-थलग रखा गया। ग्रामीण क्षेत्रों में दलितों के प्रति आज भी भेद-भाव पाया जाता है यद्यपि नगरीय क्षेत्रों में समाप्त होने जा रहा है।

वस्तुतः स्थिति यह कि दलित भारत में सदीयों से हिन्दुओं, मुसलमानों अंग्रेजों शासकों की राजनितिक एवं धार्मिक की शोषण की चक्की में पिसते रहे हैं। इनकी मान-मर्यादा एवं जान-माल सभी कुछ लोलुप दृष्टि ~~से~~ का शिकार होते जा रहा है। धार्मिक प्रहारों को सहन करते-2 दलित वर्ग जरजर हो चुका है तथा इसी के परिणाम स्वरुप सामाजिक व्यवस्था ~~व~~ प्रथाएँ आडम्बर और अन्धविश्वास फैल चुका है। आज दलित शिक्षा प्रति वंचित होने के कारण अज्ञान में सही मार्ग दर्शन पाने के लिए इधर-उधर भटक रहे हैं। दलित वर्ग की स्त्रीयों की स्थिति तो और भी बत्तर होती जा रही है। वे सबसे अधिक शोषित उत्पीड़ित, अशिक्षित, एवं अन्धविश्वासी हैं।

4/4/19

* **दलितों की समस्यौं एंव उसका समाधान**

→ भारतीय समाज के दलित सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त निम्न माने जाते हैं तथा आर्थिक ~~दृष्टि~~ दृष्टि से अभाव ग्रस्त भी हैं। इस स्थिति में इनमें शिक्षा का प्रसार भी बहुत कम ही हुआ है। शिक्षा के इस न्यूनतम प्रसार के कारण दलितों में अज्ञानता, अन्धविश्वास एंव अनेक

Scanned with CamScanner